प्रकाशन की तिथि 04.03.2019

ओ३म्

एक प्रति मूल्यः रू. 4.00

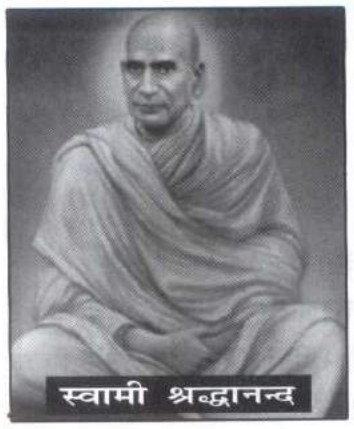

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 42 अंक 3

''शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है''

वार्षिक शुल्क : 50 रूपये
आजीवन शुल्क : 500 रूपये

मार्च 2019 विक्रम सम्वत् 2075 माघ-फाल्गुन

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता: श्री हरबंस लाल कोहली श्री चतर सिंह नागर श्री विजय गुप्त श्री सुरेन्द्र गुप्त

प्रबन्धक: श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

वीर शहीद जवानों को हमारी ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि शत-शत नमन

दिव्य दयानन्द एवं बोधोत्सव

- प्रो. श्रीमती वेद साहनी

इतिहास साक्षी है विश्व में जितने भी महापुरुष आए, जिन्हें विश्व सम्मानपूर्वक पूजता है, उनके जीवन को पवित्र और महान बनाने में उनकी संकल्प शक्ति ही रही है। यजुर्वेद के 34वें अध्याय के छह मन्त्रों में बार-बार ईश्वर से यही प्रार्थना की गई है-''तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु'' अर्थात इन्द्रियों के प्रकाशक, मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो। यही उस की व्यक्तित्व की सफलता का दिव्य चमत्कार होता है। बीज अंकुर के पश्चात् जब पौधे का रूप लेता है तो उसे सहज ही उखाड़ा जा सकता है, जब वह वृक्ष का रूप धारण कर लेता है तो उसे उखाड़ना शक्ति के बाहर हो जाता है, इसी प्रकार बुराई के लिए नीति शास्त्र में भी लिखा है- ''बुराई की कली को प्रारम्भ में ही उखाड़ देना चाहिए'' वे कर्मफल जो दुखदायी हैं उन से भी पीछा छूट जाता है। अतः मनुष्य को निराशावादी न होकर सदैव सद्-विचारों को शुभ संकल्पों को ही धारण करना चाहिए। मानव के संकल्प में अद्भुत, गुप्त शक्ति होती है जो मनुष्य को पुरूषार्थी, आत्म-विश्वास की दृढ़ता आस्तिकता, सर्वशक्तिमान ईश्वर पर पूर्ण विश्वास एवं समर्पित बनाती है। इसी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को साधारण साधु से वर्तमान काल में ऋषि, महर्षि, वेदोद्धारक आदि की संज्ञा से विभूषित कर दिया। इसी शक्ति बल से ऋर्षि ने सम्पूर्ण जीवन जोखिमों भरा व्यतीत किया। क्या-क्या नहीं सहा, हमारे ऋषि वर ने? ऋषि की उन्हीं मान्यताओं को आज सभी मानते हैं, अपना भी रहे हैं, लेकिन उसे अपना हितैषी मानने को तैयार नहीं हैं। महर्षि भी स्वयं कहते - ''भारतवासी ऐसी गहरी निद्रा में निमन्न हैं, आँखें खोलने के लिए तैयार ही नहीं। कुरीतियों के खण्डन रूपी कोड़ों से कभी किसी तरह से जाग उठें, तो ईश्वर को कोटि-कोटि धन्यवाद दूँगा।'' ऋषि यह भी कहते हैं कि यदि देश में सभ्यता का सूर्य चमके और वेदों का सत्यज्ञान फैले तो अज्ञानी भारत का अन्धकार जिस ने जनता को ऐसी अधोगति में डाल दिया है, एक दिन अवश्य दूर हो जाएगा। आर्ष ग्रन्थों के ज्ञान के बिना संस्कृत विद्या का यथार्थ फल प्राप्त नहीं हो सकता।'' दुःख होता है कि हम उस महान योगी क्रांतिकारी का मूल्यांकन और योगदान को पहचान नहीं पाए।

ऋषि बोध होने के पूर्व भी तो कई शिव रात्रियां आई थीं कितने भक्तों ने व्रत, अनुष्ठान श्रद्धा पूर्वक किए होंगे। इस दृश्य को जिस से कायाकल्प ऋषि का हुआ, अन्य किसी पर कोई प्रभाव क्यों नहीं पड़ा? इस भारत भूमि पर ऋषि दयानन्द के आगमन से ही सत्य का उद्घाटन हुआ। इन्हीं के मानस पर इस छोटी सी घटना का प्रभाव पड़ा। जिस ने जीवन में क्रान्ति ही ला दी। सच्चे शिव के लिए उतावले थे और सच्चे शिव को पा ही लिया। यह शिव वही निराकार ब्रह्मा ही तो था। इस सच्चे शिव की अनुभूति अकेले ही नहीं बल्कि जन-जन को करा गए। गौतम बुद्ध ने भी एक वृद्ध, रोगी और शव को देखा। घर छोड़, निकल पड़े और विश्व को जीवन की निसारता का अपना दर्शन दे दिया। बुद्ध धर्म स्थापित किया। संत तुलसी दास को भी एक पत्नी के उलाहने ने बदल दिया और बोले **''हम तो चाखा प्रेम-रस, पत्नी के प्रसाद''।**

हजरत मुहम्मद साहब ने भी यह माना, पर उन्होंने बाहुबल से पराजितों के देवस्थलों की मूर्तियां तोड़ीं। कालान्तर में ताजिए कब्रें बना मूर्तिपूजा उन में भी अवतरित हो गई। केवल श्रेष्ठ जन (आर्य) ही उस प्रक्रिया को लांघकर सच्चे ईश्वर की पूजा-स्तुति, प्रार्थना, उपासना का आनन्द लाभ प्राप्त करते हैं। यह मेरे ऋर्षि का ही तप था। मान्यता है सतयुग को ऋर्षि युग की संज्ञा से जाना जाता रहा। त्रेता में और द्वापर में श्री राम चन्द्र जी और योगीराज श्री कृष्ण जी ने जो किया, वही कलयुग में महर्षि स्वामी दयानन्द ने अकेले ही कर दिखाया। मेरी तुच्छ बुद्धिनुकूल ऋर्षि और महापुरूष में अन्तर होता है। महापुरूष तो स्वयं को समय के अनुकूल ढाल कर चलते हैं जैसे-श्रीराम चन्द्र जी ने अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए सभी प्रकार की बुराईयों को दूर किया। श्री राम जी में लोभ, लालच मात्र भर भी नहीं था। वे स्वयं को प्रजा का सेवक मानते थे। लंका जीती और विभीषण को राज्य दे स्वयं अपने देश (अयोध्या) लौट पड़े। श्री कृष्ण जी ने **''यतोधर्मः ततो जयः''** अधर्म और धर्म का पर्दा साफ कर समाज के साथ चले। ऋषि तो बहुत आगे की बात करते हैं, सत्य विचारों की प्रेरणा एवं प्रोत्साहित करते हैं।

ऋषि तो अपने काल में बहुत व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए अपने अनुभवों, साधना, ज्ञान से वर्तमान, भूत एवं भविष्य के द्रष्टा होते हैं। समस्त विश्व ही उन की प्रयोगशाला होती है। वे तो उन बातों को स्पष्ट करते हैं जिस की कल्पना मानव बुद्धि की बहुत दूर की बात होती है। दिव्य

(शेष पृष्ठ 2 पर)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

उरी के बाद पुलवामा आखिर क्यों?

सम्पादकीय

—आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

उरी के बाद पुलवामा धमाका हुआ। अभी उरी में शहीद हुए परिवारों के आंखों के आंशु भी नहीं सूखे थे, कि पुलवामा में फिर से आतंकी हमला हो गया। जनता में पहले की अपेक्षा अब आक्रोश अधिक है, क्योंकि हमारे जवान निर्दोषता पूर्वक शहीद हुए हैं। पुलवामा धमाके से देश में सभी की आँखे नम हैं। कई जवान ऐसे भी थे जिनकी आयु अठारह वर्ष की थी। इनमें कुछ ऐसे भी जिनकी अभी शादी हुई थी। इस प्रकार के कायराना हमला पाकिस्तान की आदत है।

❑ उरी हमले के बाद यह पहला ऐसा बड़ा हमला है जिसमें कार के द्वारा फिदायिन विस्फोटक का प्रयोग किया गया। कश्मीर में 18 वर्ष पहले भी इसी प्रकार का हमला हुआ था और अब फिर उसी प्रकार के हमले को अंजाम दिया गया।

❑ जम्मू कश्मीर के उरी सेक्टर में आतंकियों ने सेना के बैस कैंप पर सुबह 5.30 बजे हमला किया। इसमें 19 जवान शहीद हो गये थे। और इसकी जवाबी कार्यवाही में देश के जवानो ने सर्जिकल स्ट्राईक भी की थी, जिसमें उनका भारी भरकम नुकसान किया गया था, लेकिन उसके बावजूद भी पाकिस्तान नहीं सुधरा- क्योंकि

बेटा पिटने का आदी है
बेटा पक्का जिहादी है
शायद बेटे कि किस्मत में
बरबादी ही बरबादी है॥

बेटा जब बड़ा हो जाता है तो पिता को आंखे दिखाता है, लेकिन पिता जब उसकी परताड़ना करता है तो वह पुनः लाईन पर आ जाता है। ऐसे ही पाकिस्तानी बेटों की आदत है-पाकिस्तान को यह मालूम है कि हम भारत से युद्ध में अनेकों बार पराजित हो चुके हैं। उन्हें यह भी पता है कि हम उनके समक्ष और समकक्ष नहीं है, उन्हें यह भी पता है हमारी बरबादी निश्चत है-क्योंकि

तेरी खुद की बरबादी में,
खुद को बरबाद नहीं होने देगें।
हम भारत माता के सीने पे
जिहाद नहीं होने देगें।

उरी हमले के बाद पुलवामा में जो हमला हुआ है वह बड़ा मार्मिक है। यदि हमने दोबारा से इस हमले पर कोई समझौता किया, तो यह हमारे गाल पर थप्पड़ का काम करेगा। क्योंकि पूर्व सरकार ने अभी तक यही किया है, अगर इन जिहादियों को पहले से समझौते की आदत ना डाली होती तो शायद आज पुलवामा में हमारे इतने जवान शहीद नहीं होते हैं क्योंकि-

वो हम पर छल पर छल करते आया-
हम अड़े रहे विश्वासों पर
कितने समझौते थोप दिये यारो
हमने बेटों की लाशों पर॥

(पृष्ठ 1 का शेष)

ऋषियों ने वेद ज्ञान के प्रकाश पुंज रूप को अपनी समाधि, विशिष्ट ज्ञान के द्वारा अद्वितीय, स्वच्छ, श्रेय मार्ग से लाभान्वित कराया। अनुवर्ती ऋषियों ने उसी ज्ञान से सत् ज्ञान विचारों की प्रेरणा दी। कालवर्ती प्रचलित कुरीतियों को दूर करने हेतु श्रेय और प्रेय राह दिखाया। ऋषि की शिक्षाएं सदैव चिरस्थायी होती है। संसार में परिवर्तन और युग को भी पलटने में सिद्ध कर होती है। वे हिंसकात्मक नहीं मार्गदर्शक ही बनते हैं। हृदय पटल पर सहस्त्रों उद्भूत लक्ष्मियों का वास होता है, न जाने कब कौन सी लक्ष्मी कब उद्भूत होकर जीवन ही परिवर्तित कर दे। महर्षि भी इसी कड़ी से जुड़े होने के कारण घर बार सुख छोड़ सच्चे शिव की तलाश में गुरु विरजानन्द जी के पास गए, सम्पूर्ण वेद ज्ञान का अध्ययन किया। गुरु दक्षिणा में गुरु जी ने मांगा-पढ़ी विद्या को सफल कर दिखाओ, धर्म का आलोक सर्वत्र विकीर्ण करो। यही गुरु दक्षिणा है। ''ईश्वर तुम्हारे पुरूषार्थ को सफल करे। वेद प्रमाण की कसौटी को जीवन भर नहीं छोड़ना''।

ऋषिवर ने मनुष्य और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए कठिनतम संकटों को सहन किया। अन्ततः सफलता की प्राप्ति की। मार्ग जो दिखाया वह विश्व इतिहास में अनमोल निधि के रूप में शताब्दियों तक देखा जाएगा। यह देव पुरूष जीवन भर संकटों से जूझा, जहर पीया। दुःख है ऋर्षि के परिश्रमानुसार कहीं भी आत्म-चिन्तन, आत्म सुधार, दुर्गुण व्यसनों के छूटने की ललक व पीड़ा आज नजर नहीं आती। महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना अविद्या के नाश और विद्या के प्रकाश हेतु की थी। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आनन्द को प्राप्त करने हेतु की थी। सोचे? क्या हम आर्य लोग उसे पूरा कर रहे हैं? आज आधुनिकता की आंधी ने हमें इतना उड़ा दिया है कि पाप, अधर्म व अनैतिकता कार्य करते हुए किसी को लज्जा, संकोच नहीं होता। किसी को अपने अन्दर की आवाज सुनने की फुर्सत ही नहीं है। विश्वसनीयता, आर्यत्व दिखाई नहीं पड़ रहा है। ऋषि ने तो अपने त्याग, सेवा, सच्चाई बलिदान से अपनी एक अलग पहचान बनाई थी। कभी कोई आर्य संज्ञा से विभूषित कोर्ट, कचहरी, गवाही देता तो उसे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता। आज 'आर्य' शब्द का अर्थ ही दूसरा हो रहा है। सभा भवनों सत्संगों में सब दिखावा मात्र है। बैठकर तोता रटन्त को ही परमधर्म मानना जो ऋषि के नियमों के विपरीत है। यदि हम अपने जीवन, परिवार में सामाजिक कुरीतियों में परिवर्तन नहीं ला पा रहे तो मात्र अधिकारी बनना, भाषण देना- यह हम लोगों को (ऋषि भक्तों) शोभा नहीं देता।

पर्व हमें जगाने दिशा बोध करने, प्रेरणा व चेतना देने हेतु आते हैं। इन पर्वों को तो मानव और महापुरूषों की जीवनियों से, धर्मग्रन्थों से कुछ नहीं सीखें, यह तो हमारी ही बुद्धि का दिवालापन है। आज आवश्यकता है हम स्वयं अपने जीवन, व्यवहार, आचरण, संगठनों संस्थाओं में सत्य चरण की, ऋषि प्रदत्त पहिचान बनाएँ। तभी हम दूसरों को आकर्षित कर सकेंगे। सच्चे शिव से नाता जोड़ सकेंगे। जगन्नियन्ता को कण-कण में अनुभव करें। ऋषि का प्यारा मंत्र विश्वानि देव यद भद्रं तन्न आसुव' पूरा कर पावें। तभी हमारा यज्ञ करना, सत्संग करना और सच्चे आर्य बनने में सार्थकता हो सकेगी, वास्तव में प्रत्येक आर्यजनएक चलता फिरता आर्य समाज है। आर्य समाज किसी सुन्दर सज्जित, चमत्कृत भवन का नाम नहीं, मानव समाज को आर्य बनाना एक भवन निर्माण से भी बढ़ कर है।

हम सब पर महर्षि का ऋण है इस से उऋर्ण होने हेतु, हमारा परमधर्म है कि मानव मात्र सुपथगामी हो, सच्चे शिव की आराधना करें, शिव बोध को बड़ी धूमधाम से मनावें। सद्गुणों से ओत प्रोत हों। हम सभी आर्य वीर, जाति, सम्प्रदाय की संकुचित भावनाओं का परित्याग, उसी ईश्वरीय व्यवस्था को जो परोपकारमय है अपना ले, उसे ही स्थापित करने हेतु महर्षि के ''संस्कार विधि'' में लिखे जो स्वर्णिम अक्षर हैं, अपनाएं। ''वसुधैव कुटुम्बकंम्'' की भावना से जीवन की उच्चता प्राप्त करें। ''संगच्छध्वं'' को जीवन का अमोघ मन्त्र मानते हुए पुनः सर्वत्र शान्ति, भ्रातृ-भावना आनन्द से तृप्त हों। कल्याणकारी आदर्शों एवं शिक्षाओं पर चलने से ही मानव मात्र का कल्याण है। यह बोधोत्सव हम सब के जीवन में एक नई प्रेरणा दे। ऋषि को कोटिशः नमन।

-5-क-11, जवाहर नगर, जयपुर,
मो. 09414209024

–आर्य पर्व नवसस्येष्टि एवं होली पर–

'होली एक धार्मिक अनुष्ठान एवं आमोद-प्रमोद का पर्व है'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आर्यावर्त उत्सवों व पर्वों का देश है। पर्व का अपना महत्व होता है। होली भी दीपावली, दशहरा, श्रावणी आदि की ही तरह एक सामाजिक एवं धार्मिक पर्व है। यह पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इसे मनाने की प्रासंगिकता व महत्व अन्य पर्वों से कुछ अधिक प्रतीत होता है। इस पर्व को चैत्र माह के आरम्भ से एक दिन पूर्व फाल्गुन पूर्णिमा को एक वृहद यज्ञ करके मनाते हैं और अगले दिन सभी लोग एक दूसरे को पर्व की बधाईयां देने के साथ मिष्ठान्न गुजिया व अन्य पदार्थों से स्वागत व आदर देते हैं तथा गुलाल व रंग लगाते हैं। **होली का महत्व किन कारणों से है?** इसका मुख्य कारण तो यह है कि होली पर्व के समय शीत बहुत कम हो जाती है जिससे लोग कई महीनों से त्रस्त थे। दिन भी छोटे होते थे। सायं 5 से 5.30 बजे ही अन्धकार हो जाता था। होली से लगभग डेढ़ महीने पहले दिनों का बढ़ना आरम्भ हो जाता है। शीत ऋतु में पहने जाने वाले वस्त्रों को सुखा व सम्भाल कर अगले वर्ष के लिये सुरक्षित रख देते हैं। होली से कुछ दिन पहले हल्की गर्मी आरम्भ होने के कारण इस ऋतु के अनुकूल वस्त्रों को तैयार करते हैं। यदि पर्यावरण एवं वनस्पति जगत की दृष्टि से देखा जाये तो इस अवसर पर आषाढ़ी फसल तैयार होने को होती है। गेहूं की बालियों व फलियों में नव–अन्न बन जाता है जिसका पकना शेष रहता है।

किसान ने इसे उगाने में बहुत परिश्रम किया होता है। उसे आरम्भ में कहीं न कहीं डर होता है कि किसी कारण से उसका परिश्रम व्यर्थ न हो जाये। होली के बाद जौं व गेहूं आदि की फसल का कटना आरम्भ होने को होता है। **अतः किसान अपनी मेहनत व उससे उत्पन्न फसल को देखकर प्रसन्न होता है जिसे वह ईश्वर का धन्यवाद करते हुए उत्सव के रूप में मनाकर अपने परिवार व ईष्ट मित्रों को भी प्रसन्नता प्रदान करने का प्रयास करता है।** प्राचीन समय से इस अवसर पर गेहूं के नये दानों को अग्नि में तपा कर उनसे वृहद–यज्ञों में आहुतियां देकर यज्ञ किया जाता है जिससे ईश्वर का धन्यवाद होता है और इसके बाद अन्न का उपभोग करने में सुख व संतोष का अनुभव होता है। होली के अवसर पर हमारे सब वन–उपवन भी नये पत्तों व पुष्पों से आंखों को अत्यन्त प्रिय लगते हैं और उपवनों में सुगन्ध आदि का वातावरण मन को सुख व आनन्द देता है। अतः यह समय हर दृष्टि से उत्सव के अनुकूल होता है। इस अवसर पर वातावरण में न अधिक शीत होता है न उष्णता। वनस्पति जगत अपने यौवन पर होता है एवं मनभावन होता है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि रंग–बिरंगे पुष्पों की तरह परमात्मा ने मनुष्यों को गोरा, काला, सावंला, गेहूंवा आदि अनेक रंगों व आकृति वाला बनाया है। किसी को परमात्मा ने लम्बा तो किसी को नाटा, किसी को मोटा तो किसी को पतला तथा किसी को गांठा तो किसी को पतला बनाया है। शरीर का बाह्य रूप गोरा व काला आदि है तो अन्दर धमनियों में लोहित या लाल रंग का रक्त बहता है। पुष्पों के रंग भी हमें ईश्वर की महिमा का परिचय देते हैं जो मिट्टी से नाना रंगों व मनमोहन आकृतियों के पुष्पों को उगाता, बनाता व संवारता है। पुष्पों में उसकी सर्वोत्तम निर्माण कला के दर्शन होते हैं। ऋषि कहते हैं कि रचना को देखकर रचयिता का ज्ञान होता है। फूलों को देखकर भी ईश्वर का साक्षात किया जा सकता है। ईश्वर गुणी है और फूल उसका गुण वा रचना, अस्तु।

होली पर्व के अवसर पर फलों के रंगों के अनुरूप हम स्वयं भी एक दूसरे के चेहरों पर रंग लगा कर उन्हें पुष्पों के समान आकर्षक व मनमोहक रूप देना चाहते हैं। खिले पुष्प की हम खुशियों व सुख से उपमा देते हैं और कामना करते हैं कि हमारे सभी इष्ट–मित्र सदैव पुष्पों की तरह हंसते मुस्कराते व खिले–खिले से रहे। यही काम हम अपने मित्रों व कुटुम्बियों के चेहरे पर रंग लगाकर उन्हें शुभकामनायें देते हुए मिष्ठान्न आदि खिला कर करने का प्रयास करते हैं। ऐसी भी किम्वदन्ति है कि इस दिन सभी लोग अपने मतभेद व मनमुटाव भुलाकर परस्पर सद्भाव व प्रेम का परिचय देते हैं। यदि इस दिन लोग इस दिशा में कुछ पग भी आगे बढ़ाते हैं तो यह किसी उपलब्धि से कम नहीं है। इसका कारण ऐसा करने से मन को सुख व शान्ति का मिलना है।

वैदिक धर्म व संस्कृति में ईश्वर की आज्ञा का पालन व परोपकार के पर्याय यज्ञों वा अग्निहोत्र का विशेष महत्व है। वैदिक संस्कृति में महाभारत युद्ध के कारण कुछ परिवर्तन व विकार भी आया है। हम इन पर्वों के प्राचीन स्वरूप व मनाने की विधि को प्रायः भूल चुके हैं। अब इस पर्व को मनाने के विकृत रूप से ही अनुमान किया जा सकता है कि होली पर्व का प्राचीन स्वरूप क्या रहा होगा? होली पर पूर्णिमा के दिन बड़ी मात्रा में लकड़ियों व उपलों को एकत्र कर रात्रि के समय उसे मन्त्रोच्चारण कर जलाया जाता है और उसमें मन्त्र बोलकर हवन सामग्री व नवान्न के होलों की आहुतियां दी जाती हैं। इससे अनुमान लगता है कि यह प्रक्रिया व अनुष्ठान वृहद यज्ञों का बिगड़ा हुआ स्वरूप है। ऋषि दयानन्द ने 155 वर्ष पूर्व वेद व उनके सत्य अर्थों से देशवासियों का परिचय कराया है। अग्निहोत्र यज्ञ पर्यावरण व वातावरण को शुद्ध व पवित्र करने, दुर्गन्ध का नाश करने, रोग व हानिकारक कीटाणुओं को निष्प्रभावी व नष्ट करने, ईश्वर की वेदाज्ञा का पालन करने और अपने हितकर व इष्ट पदार्थों का भोग करने से पहले उसे ईश्वर के प्रतीक अग्नि व सभी देवताओं के मुख अग्नि को आहुति रूप में समर्पित करने के लिये किया जाता है। ऐसा करके हम इस बृहद यज्ञ में अपने जिन साधन व सामग्री का व्यय करते हैं उससे कहीं अधिक लाभ प्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से हमें मिलता है। हमारे जीवन निर्वाह के कारण प्रकृति में वायु, जल, भूमि आदि का जो प्रदूषण होता है तथा चूल्हे व चक्की से जो जीव–जन्तु आदि मर जाते व पीड़ित होते हैं उस हानि की आंशिक निवृत्ति व पूर्ति होती है। होली पर अपने से ज्ञान, धन व बल में न्यून अपने सामाजिक बन्धुओं को अपने गले से लगाकर हम यह जताते हैं कि हम सब एक ईश्वर के पुत्र हैं और सब परस्पर सहयोगी है। सबको एक दूसरे के हितों का ध्यान रखते हुए परस्पर सहयोग करना है जिससे किसी को किसी प्रकार का दुःख व पीड़ा न हो। ऐसी अभिव्यक्तियां ही इस पर्व को मनाते हुए लोग प्रतीक रूप में करते हुए दीखते हैं।

(शेष अगले अंक में)

हार्दिक आभार

श्रीमती संतोष वधवा जी मन्त्री शुद्धि सभा दिल्ली सक्रिय व कर्मठ सदस्या आर्य समाज नारायणा विहार नई दिल्ली-पिछले कई वर्षो से शुद्धि सभा के लिए आर्थिक सहयोग (दान-राशि) एकत्रित करके प्रदान कर रही हैं, इनके व्यक्तिगत परिश्रम से 'शुद्धि समाचार' मासिक के लगभग 60 से अधिक आजीवन सदस्य, नारायणा विहार कॉलोनी एवं अन्य स्थानों पर बनाये गये हैं और निरन्तर शुद्धि सभा के कार्यों में सहयोग कर रही हैं। इनके द्वारा ''शुद्धि समाचार'' के आजीवन सदस्य बनाने के लिए हम इनका हृदय आभार व्यक्त करते हैं। परमात्मा इनको स्वस्थ आयु प्रदान करे और वह इसी तरह आर्य समाज व शुद्धि सभा के लिए अपना सहयोग प्रदान करती रहें।

नरेन्द्र मोहन वलेचा, प्रधान

सब मनुष्यों का एक ही धर्म

- आचार्य प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। पाँच हजार वर्ष पूर्व तक वेद मत से भिन्न कोई दूसरा मत नहीं था। आज सारा संसार धर्म के नाम पर लड़ रहा है। क्या सब मनुष्यों का 'एक ही धर्म' होना संभव है? क्या महर्षि दयानन्द की यह परिकल्पना असंभव है कि परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करे!। लेख पुराना अवश्य है, पर अधिकारी विद्वान का विचार नित्यनूतन है।

जब परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य को उत्पन्न करके उसे आंखे दी थी, उसी समय उसकी आंखों को सहायता देने के लिए सूर्य का प्रकाश भी दे दिया था। मनुष्य आंखें खोलकर चले और सूर्य के प्रकाश से सहायता ले तो उसे पता लगता रहेगा कि झाड़ों-झंखाड़ों, कांटे-कंटीलों, ईट-पत्थर, गड्ढे-टीलों आदि से रहित, साफ-सुथरा और अपने गंतव्य स्थान तक पहुंचने का सीधा मार्ग कौन सा है। इसी भांति हमारी मन की, बुद्धि की आंखों की सहायता देने के लिए प्रभु ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद रूपी सूर्य के ज्ञान का प्रकाश भी दे दिया था। हम मन से, बुद्धि से, विचारपूर्वक वेद का अध्ययन करें और वहाँ से जो ज्ञान प्राप्त हो उसे भली-भांति समझ लें तो हमें पता चलता रहेगा कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। वेद से प्राप्त इस ज्ञान के अनुसार आचरण यदि हम करने लग जाएं तो हमारा जीवन सभी दृष्टियों से पूर्ण सफल बन जाएगा। वेद का यह उपदेश किसी विशेष देश और किसी विशेष जाति के लिए नहीं है। यह उपदेश प्रभु ने धरती पर रहने वाले सभी मनुष्यों और सभी जातियों के लिए दिया है, जिससे मानव मात्र अपने जीवन को सब प्रकार की सुख समृद्धि से भरपूर बना सके। इस प्रकार वेद के उपदेश, वेद का धर्म सार्वभौम है।

वेद का धर्म सबके लिए: वेद में प्रभु ने स्वयं कहा है मैं वेद की इस कल्याणकारिणी वाणी को सब मनुष्यों को उनके कल्याण के लिए दे रहा हूँ। (यजु. 26/2) एक दूसरे स्थान पर वेद इसी सम्बन्ध में कहता है कि 'हे मनुष्यों, मैंने माता की भांति कल्याण करने वाले वेद को तुम्हारे लिए प्रस्तुत कर दिया है, वेद का यह ज्ञान मनुष्य को उद्यमशील बना देता है, और उसके हृदय व मन को पवित्र कर देता है, इसके ज्ञान से तुम्हें लम्बी आयु प्राप्त होगी, बलिष्ठ प्राण-शक्ति प्राप्त होगी, गौ आदि उपयोगी पशु प्राप्त होगें, कीर्ति प्राप्त होगी, धन-सम्पत्ति प्राप्त होगी, ब्रह्मतेज प्राप्त होगा और अन्त में ब्रह्मलोक अर्थात् मोक्ष प्राप्त होगा, जिससे तुम ब्रह्मानन्द रस का पान कर सकोगे। (अथर्व 19.71.1)

वेद के इन और ऐसे ही अन्य स्थलों से अत्यन्त स्पष्ट है कि वेद का धर्म मानवमात्र के लिए दिया गया सार्वभौम धर्म है। हम वेद के प्रचारकों की भी यही मान्यता है। हम मानव मात्र के कल्याण को लक्ष्य में रखकर वेद का धरती भर में प्रचार करना चाहते हैं। वेद के उपदेश व्यक्ति और समाज में मनुष्य के लिए कितने हितकारी हैं और उसे कितना ऊँचा उठाने वाले हैं, इसे दिखाने के लिए हम यहाँ वेद की कुछ शिक्षाओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

सब मनुष्य भाई-भाई:- वेद कहता है कि 'ईश्वर हम सब मनुष्यों का माता और पिता है' (ऋ 8.18.11) और 'हम उस अमर परमात्मा के पुत्र है। (ऋ 10.13.1) इसका स्पष्ट भाव यह है कि हम धरती के सब मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। हम सबको एक दूसरे को आपस में भाई की दृष्टि से देखना चाहिए तथा जिस प्रकार एक माता से उत्पन्न भाई एक दूसरे की सहायता करने और एक दूसरे का कष्ट दूर करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं उसी प्रकार हम सब परमात्मा के पुत्रों को भी एक दूसरे ही सहायता करने और एक दूसरे का कष्ट दूर करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। किसी मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य की किसी प्रकार की हानि नहीं करनी चाहिए और उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहिए, प्रत्युत उसके कष्ट दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। यहाँ तक कि पशु-पक्षियों को भी कष्ट नहीं देना चाहिए, वे भी परमात्मा के पुत्र हैं और हमारे भाई ही हैं।

सभी प्राणी हमारे मित्र: वेद का उपदेश है कि 'हमें प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए और ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि सभी प्राणी हमें मित्र की दृष्टि से देखें, सभी को आपस में एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए। (यजु. 36.18) मित्र का शब्दार्थ स्नेह करने वाला होता है। इसका एक अर्थ मृत्यु से, विनाश से, रक्षा करने वाला भी होता है। मित्र आपस में एक दूसरे से स्नेह किया करते हैं और एक दूसरे की विनाश से तथा सभी प्रकार की हानियों से रक्षा किया करते हैं। हमें प्राणी मात्र को अपना मित्र समझ कर उनसे स्नेह करना चाहिए और स्नेही मित्रजिस तरह एक दूसरे का हित किया करते हैं उसी प्रकार प्राणी मात्र का हित करने में हमें तत्पर रहना चाहिए। जैसे स्नेही मित्र एक दूसरे की विनाश से रक्षा किया करते हैं, उसी प्रकार हमें देखना चाहिए कि कोई प्राणी अपनी किसी गलती के कारण विनाश को न प्राप्त हो जाये,कोई हानि न उठा ले। हमें उसकी भूल सुधारने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। हमें अपनी ओर से तो किसी के विनाश में और किसी की हानि करने में प्रवृत्त होना ही नहीं चाहिए।

नि:स्वार्थ स्नेह से विश्व की एकता:- हमें आपस में एक दूसरे को कितने गहरे प्रेम से देखना चाहिए, इस सम्बन्ध में वेद के द्वारा परमात्मा आदेश देते हैं कि 'हे मनुष्यों, तुम सब अपने हृदय एक बनाकर रखो, अपने मन एक बना कर रखो, तुम आपस में द्वेष मत करो, तुम सब आपस में एक दूसरे को इस प्रकार प्रेम से चाहो जिस प्रकार कि एक गौ अपने ताजे पैदा हुए बछड़े को चाहा करती है (अथर्व 03.30.1) प्रेम की प्रगाढ़ता को दिखाने के लिए वेद ने बछड़े और गौ की इस उपमा में कमाल कर दिया है। मनुष्य माता के अपने पुत्र के प्रति प्रेम में तो फिर भी कुछ स्वार्थ छिपा रहता है कि यह कभी आगे भविष्य में मेरी सेवा करेगा और मुझे सुख देगा, परन्तु गौ में अपने ताजे पैदा हुये बछड़े के प्रति प्रेम में इस प्रकार का तनिक सा भी स्वार्थ छिपा नहीं होता। आगे चलकर कुछ अरसे के बाद तो ये एक दूसरे को कतई भूल जाते हैं। उन्हें यह भी बिल्कुल स्मरण नहीं रहता कि यह मेरा पुत्र और यह मेरी माता है। गौ का बछड़े के प्रति नि:स्वार्थ प्रेम रहता है। हम सब मनुष्यों में, चाहे हम किसी राष्ट्र के निवासी हों और चाहे सारी धरती के निवासी हों, आपस में इतना गहरा प्रेम रहना चाहिए कि जितना गौ का ताजे उत्पन्न हुए अपने बछड़े के प्रति होता है। इतने गहरे प्रेम में भरकर एक दूसरे का हित साधन करना चाहिए। तभी राष्ट्रों व धरती के सब निवासी भरपूर उन्नति कर सकेंगे और अपने प्रदेशों और घरों को सुख का धाम बना सकेंगे।

कोई बड़ा या छोटा नहीं:-वेद मनुष्यों में परस्पर के व्यवहार में ऊंच-नीच के विचार और बर्ताव को स्वीकार नहीं करता। वेद आपस के व्यवहार में पूर्ण समानता और सम्मान के आचरण का उपदेश करता है। वेद में कहा गया है कि मनुष्यों में कोई बड़ा और कोई छोटा नहीं है, सब आपस में भाई हैं, सबको मिलकर अपने राष्ट्र और समाज के सौभाग्य की वृद्धि करनी चाहिए, परमात्मा सब का पिता है और पृथ्वी सबकी माता है, ऐसा जानकर सब भाई-भाई की भांति मिलकर काम करेंगे तो धरती माता सबके लिए भांति-भांति के ऐश्वर्य और भोग प्रदान करेगी तथा सबके जीवन के दिन सुदिन बने रहेंगे। (ऋ 5.60.5) यदि वेद की इस शिक्षा पर किसी देश के सब लोग आचरण करने लग जाएँ तो उनका कितना कल्याण हो सकता है।

सबकी उन्नति में अपनी उन्नति: मनुष्य समाज की सर्वतोमुखी उन्नति और सुख समृद्धि के लिए वेद में स्थान-स्थान पर अत्यन्त महत्वपूर्ण उपदेश दिये गये हैं। एक स्थान पर कहा है कि 'हे मनुष्यों, तुम एक दूसरे के लिए सुन्दर मीठी वाणी बोलो।' एक अन्य स्थान पर कहा है कि-'मनुष्यों, तुम्हारे पानी पीने के स्थान समान हों, तुम्हारा अन्न का सेवन समान हो, तुम स्नेह के बन्धन में समान रूप से बन्ध कर रहो, मिलकर ज्ञान स्वरूप परमेश्वर की उपासना करो और मिलकर अपने यज्ञ किया करो, तुम सब इस प्रकार मिलकर रहो

जैसे कि रथ चक्र की नाभि के चारों ओर उसके धुरे मिले हुये रहते हैं। (अथर्व.3.30.6) एक दूसरे स्थल पर वेद कहता है कि 'सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी हे, मनुष्यो, तुम सब परस्पर मिलकर रहो, मिलकर चलो, प्रेम से मिलकर बातचीत करो। तुम्हारे मन मिलकर परस्पर सहयोग से ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार कि तुम से पहले के विद्वान पुरुष मिलकर परस्पर सहयोग से विविध प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए अपने लिए ऐश्वर्य और अभ्युदय के अपने-अपने भाग को प्राप्त करते रहे हैं।' ऐश्वर्य के अभिलाषी तुम सबका गुप्त और गंभीर विषयों की मन्त्रणा करने, विचार करने का स्थान समान हो, जिसमें तुम समान रूप से जा सको, तुम्हारी राज्य सभाएं और दूसरी सभाएं समान हों, जिनके सदस्य सब बन सकें, तुम्हारा मन समान हो जिसमें परस्पर के लिए प्रेम हो, तुम्हारा मन से प्राप्त किया जाने वाला ज्ञान भी एक साथ हो अर्थात् परस्प्र के सहयोग से प्राप्त किया जावे। तुम सबको समान रूप से मिलकर की जाने वाली मन्त्रणा और विचार की मैं परमेश्वर मन्त्रणा देता हूँ, सलाह देता हूँ, तुम सबको समान रूप से परस्पर के लिए किये जाने वाले त्याग के द्वारा ऐश्वर्य और अभ्युदय के लिए किये जाने वाले त्याग के द्वारा ऐश्वर्य और अभ्युदय प्राप्ति के यज्ञ में नियुक्त करता हूँ। तुम सबके संकल्प समान हों, तुम्हारे हृदय एक समान हों, तुम्हारा मन एक समान हो, जिससे तुम्हारा भली भांति परस्पर मिलकर साथ रहने से होने वाला ऐश्वर्य और अभ्युदय हो सके। (ऋ. 1.191. 1-4) वेद को इन उपदेशों के अनुसार धरती के मानव यदि चलने लग पड़े तो कौन सा ऐसा राष्ट्र होगा जिसके निवासीसब प्रकार की उन्नति, ऐश्वर्य और अभ्युदय तथा सब प्रकार की सुख समृद्धि के सर्वोच्च शिखर पर नहीं जा चढ़ेंगे।

सुखी और समृद्ध घर-परिवार:- हम सभी मनुष्यों को जीवन का एक बड़ा भाग विवाहित होकर गृहस्थाश्रम में कुटुम्ब के रूप में रहकर बिताना पड़ता है। हमें गृहस्थ होकर कुटुम्ब का अपना जीवन किस प्रकार बिताना चाहिए-इस सम्बन्ध में भी वेद में बड़ा मार्मिक उपदेश दिये गये हैं। वहां कहा गया है कि भाई-भाई से द्वेष न करे, बहिन-बहिन से द्वेष न करें, घर के सब निवासी मिलकर चलने वाले बनो, कर्मो और नियमों का समान रूप से पालन करो और एक दूसरे के साथ मंगल कारक भद्रवाणी बोलो। (अथर्व 3.30.3)। पुत्र पिता का अनुव्रत हो अर्थात् उसके अनुकूल कर्म करने वाला हो, माता के साथ एक मन वाला हो, पत्नी पति के लिए मधुरता युक्त मीठी और सुख शांति देने वाली वाणी को बोले। (अथर्व 3. 30.2) अथर्ववेद के चौदहवें काण्ड के प्रथम और द्वितीय सूक्त में तथा ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 84वें विवाह और गृहस्थ जीवन के सम्बन्ध में बड़े विस्तृत रूप में चर्चा की गई है और गृहस्थ जीवन को सुख का धाम बनाने के लिए बड़े महत्व के उपदेश दिये गये हैं। स्त्रियों की बहुत ऊंची तथा आदरणीय स्थिति रखी गयी हैं उन सूक्तों के सारे उपदशों और विचारों को इस लघु लेख में दे सकना संभव नहीं है। अन्य अनेक स्थलों में भी गृहस्थी जीवन के सम्बन्ध में वेद में बड़े महत्वपूर्ण उपदेश दिये गये हैं। स्थाली पुलाक न्याय से गृहस्थ जीवन के विषय में वहाँ से दो बातें ही यहाँ लिखी जा रही हैं

नारियों का स्थान:- वहाँ कहा है कि स्त्रियाँ कभी किसी प्रकार के कष्ट के कारण रोने नहीं पावें। उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाए जिससे वे निरोग रहें तथा उन्हें पहनने के लिए भांति-भांति के रत्न दिए जाएं। (अथर्व 12.2.31) गृहपत्नी को घर के सब लोगों को अपने वश में रखना चाहिए। (अथर्व.14.1.20)। गृह पत्नी को घर के सब लोगों पर राज्य करने वाली साम्राज्ञी होना चाहिए। श्वसुर पर, देवरों पर, ननदों पर और सासों पर राज्य करनेवाली साम्राज्ञी होना चाहिए। (अथर्व. 14.1. 44) गृह पत्नी को अपने घर का मंगल करने वाली और उसे बढ़ाने वाली होना चाहिए, पर वह पति को सुख देने वाली और सास को सुख देने वाली हो, (अथर्व. 16.2.26)। पति-पत्नी को सदा हँसते-खेलते रहकर हर्ष में रहना चाहिए तथा सुन्दर घरों में रहकर सुन्दर सन्तानें उत्पन्न करनी चाहिए। (अथर्व 14.2.43) पति पत्नी को कभी एक दूसरे से वियुक्त नहीं होना चाहिए। सारी आयु एक साथ रहकर भोगनी चाहिए। (अथर्व. 14.1. 22) (ऋ.10.85.42) पति पत्नी चकवे और चकवी की तरह सदा इकट्ठे रहें और उन्हें एक साथ रहकर सारी आयु भोगनी चाहिए। (अथर्व 14.2.64) अर्थात् उनमें तलाक कभी नहीं होना चाहिए। विवाहित पति-पत्नी और घर के अन्य सब लोग यदि इन पंक्तियों में उद्भुत वेद के उपदेशों तथा इसी प्रकार के अन्य स्थलों में दिये उपदेशों के अनुसार अपना जीवन बिताते रहें तो सचमुच धरती के सब लोगों के गृहस्थ जीवन स्वर्गधाम बन सकते हैं।

शिक्षा से अभ्युदय:- मानव की सारी उन्नति, ऐश्वर्य, अभ्युदय और सुख समृद्धि का मूल आधार उसकी शिक्षा है, उसे शिक्षा काल में जैसी शिक्षा दी जायेगी वह वैसा ही बन जायेगा। वह अपनी शिक्षा के अनुसार ही कार्य करेगा। यदि उसकी शिक्षा अच्छी है तो वह अच्छा बन जायेगा और अपने संसार को अच्छा बना लेगा और यदि उसकी शिक्षा बुरी है तो वह बुरा बन जायेगा तथा अपने संसार को भी बुरा बना लेगा। वेद में बालकों की शिक्षा का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। अथर्ववेद के 11वें काण्ड का पांचवा सूक्त बड़े-बड़े मन्त्रों का सूक्त है। इस सूक्त को ब्रह्मचर्य-सूक्त कहा जाता है। इसमें बालकों की शिक्षा का ही वर्णन है। वेद के अन्य अनेक स्थलों में बालकों की शिक्षा के सम्बन्ध में निर्देश दिये गये हैं। वेद में विद्यार्थी को ब्रह्मचारी कहते हैं और विद्यार्थी काल को ब्रह्मचर्याश्रम। प्रत्येक बालक के लिए कम से कम 25 वर्ष की आयु तक और बालिका 25 वर्ष की आयु तक और बालिका के लिए कम से कम 16 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्याश्रम में रहना आवश्यक है। इस अवधि में कोई बालक विवाह नहीं कर सकेगा। वह पूर्ण संयम का जीवन व्यतीत करेगा तथा भांति-भांति के विद्या-विज्ञानों का अध्ययन करेगा। उसे भौतिक विज्ञान भी पढ़ाये जायेंगे तथा आध्यात्मिक विद्या भी पढ़ाई जायेगी। यम-नियमों और प्राणायाम आदि का अभ्यास कराके उस योग की साधना भी कराई जायेगी। वेदादि शास्त्रों का भी अध्ययन उसे कराया जायेगा। इस सारी शिक्षा का परिणाम यह होगा कि जहां उसका विविध विषयों का ज्ञान बहुत ऊँची कोटि का हो जायेगा वहाँ उसके व्यावहारिक जीवन में पवित्रता आ जायेगी और वह वेद की उन ऊँची सामाजिक शिक्षाओं को भी जीवन में ढालने वाला बन जायेगा जिनका कुछ थोड़ा सा उल्लेख ऊपर किया गया है। किसी भी राष्ट्र के बालकों को उनके विद्यार्थी काल में यदि इस प्रकार की शिक्षा दी जाने की व्यवस्था हो जाये तो उसके निवासियों का नैतिक जीवन कितना ऊँचा हो जायेगा और वह भौतिक ऐश्वर्य और अभ्युदय के किस ऊँचे शिक्षा पर पहुँच जायेगा इसकी भली-भांति कल्पना की जा सकती है।

मूलभूत आवश्यकताएँ: कोई वंचित न रहे:- प्रत्येक मनुष्य की पाँच प्रधान आवश्यकताएं हैं=1-घर, 2.भोजन, 3. वस्त्र, 4. चिकित्सा, 5. शिक्षा। प्रत्येक व्यक्ति को रहने के लिए अच्छा हवादार और रोशनीदार खुला मकान मिलना चाहिए। उसे स्वास्थ्यवर्धक पौष्टिक भोजन खाने को मिलना चाहिए। उसे सर्दी-गर्मी से बचाव के लिए ऋतुओं के अनुकूल वस्त्र पहनने को मिलने चाहिएँ। रोगी हो जाने पर अच्छी से अच्छी चिकित्सा उसे मिलनी चाहिए और ऊँची से ऊँची शिक्षा मिल सकनी चाहिए। वेद में स्थान-स्थान पर मनुष्य की इन पाँच मूलभूत प्रधान आवश्यकताओं की पूर्ति के सम्बन्ध में उपदेश दिये गये हैं। वेद के अन्न सूक्तों और कृषि सूक्तों, उसके शाला (घर) सूक्तों, उसके वस्त्रों सम्बन्धी प्रकरणों, उसके आयुर्वेद विषयक, सूक्तों, उसके वस्त्रों सम्बन्धी प्रकरणो, उसके आयुर्वेद विषयक सूक्तों तथा उसके शिक्षा विषयक सूक्तों और प्रकरणों में मनुष्य मात्र की इन पांचों आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विस्तृत उपदेश दिये गये हैं। वेद के सभी प्रकरण ध्यान से पढ़ने योग्य हैं। यदि वेद के इन उपदेशों के अनुसार आचरण होने लगे तो धरती का कोई भी निवासी अपनी पाँचों आवश्यकताओं से वंचित नहीं रह सकता।

अज्ञान अन्याय अभाव का उपाय: मनुष्य की इन आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक तीन कारण होते हैं=1.अभाव, 2. अज्ञान और 3. अन्याय। यदि राष्ट्र में इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री का अभाव है तो उसके निवासियों की ये आवश्यकतायें पूरी नहीं हो सकती। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री उत्पन्न करने का ज्ञान यदि राष्ट्रवासियों को नहीं है, अथवा उत्पन्न सामग्री का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

एसिडिटी का कारण और निवारण

- वैद्या शुचि मित्रा

वैसे तो अम्लपित्त रोग कोई गम्भीर रोग नहीं है, पर रोग के गम्भीर कारणों की वजह से लोग हमेशा के लिए इस रोग के रोगी बन जाया करते हैं। अम्लापित्त (Acidity) रोग को एसिड डिस्पेपसिया, एसिड गेस्ट्राइटिस और हाइपर क्लोरहाइड्रिया के नाम से भी जाना जाता है। इस रोग का इतिहास बहुत ही पुराना है। वैसे तो आयुर्वेद के ग्रंथ चरक संहिता व सुश्रुत संहिता में अम्लापित्त रोग का स्पष्ट रूप से जिक्र नहीं है। इस रोग का जिक्र, आयुर्वेदिक सबसे पहले अपनी संहिता में आचार्य कश्यप ने किया था। इसके पश्चात् अपने ग्रंथ 'माधव निदान' में माधवकार ने एक स्वतन्त्र रोग के रूप में अम्लपित्त रोग का पूर्ण रूप से व्याख्या किया है। लगातार बासी व तामसिक भोजन खाने से शरीर में बहुत ज्यादा अम्ल तथा पित्त का निर्माण होता है। इसी को अम्लपित्त कहते हैं। बदलती ऋतुओं से इस रोग का सीधा सम्बन्ध है। शरद ऋतु और वर्षा ऋतु में यह रोग ज्यादा पैर पसारता है। इस रोग में रोगी के अमाशय में अम्ल और पित्त का निर्माण बहुत ज्यादा होने लगता है, जो इस रोग के जनक बन जाया करते हैं। तब गैस्ट्रिकम्यूकोसा में उत्तेजना पैदा होती है, जिससे हाइपर एसिडिटी का शरीर में निर्माण होता है। कई बार रोग की अवस्था में उचित उपचार न कराने की वजह से रोगी गैस्ट्रिक और ड्यूडिनल अल्सर का शिकार बन जाया करता है। रोग की गम्भीर अवस्था में रोगी को कैंसर भी हो सकता है।

लक्षण

- ❑ अम्लपित्त रोगी को थकान रहने लगती है।
- ❑ रोगी को पेट में भारीपन का एहसास होता रहता है।
- ❑ रोगी को उबकाई आती है। उसकी उबकाई में पीला, नीला, हरा या लाल रंग का पित्त निकलता है।
- ❑ रोगी को भोजन से अरूचि सी हो जाया करती है। उसे डकार आती रहती है।
- ❑ रोगी के पेट, छाती और गले में जलन रहने लगती है।
- ❑ रोगी के मुँह का स्वाद कसैला व कड़वा रहने लगता है।
- ❑ रोगी के मुँह में अम्लपित्त की वजह से छाले हो जाया करते हैं।
- ❑ रोगी के दांत भी खट्टे रहने लगते हैं।
- ❑ भूखा पेट रहने पर रोगी को जलन एक एहसास होता है और भोजन कर लेने के पश्चात जलन में कुछ वक्त के लिए आराम सा पड़ जाया करता है।
- ❑ रोगी को सही नींद नहीं आती है, जिससे वह हर वक्त टेंशन में रहने लगता है।
- ❑ रोगी की जीभ पर मैला पदार्थ जम जाया करता है।
- ❑ रोगी को गैस की प्रॉब्लम रहने लगती है। जिससे उसे अफारा, पेट दर्द और पेट फूलने की समस्या का सामना करना पड़ता है।
- ❑ रोगी के हाथ पैरों, आंखों व तलवों में जलन रहने लगती है।
- ❑ रोगी को मलमूत्र त्यागते वक्त भी जलन की अनुभूति होती है।
- ❑ इस रोग के रोगी को बार-बार थूकने की आदत बन जाया करती है।
- ❑ रोगी की नाक से गर्म-गर्म सांसे निकलती हैं और उनका गुदा मार्ग से भी तीखी खट्टी और दुर्गन्धयुक्त गैसों का विसर्जन होता रहता है।

जड़ी-बूटियों से रोग निवारण

- ❑ त्रिफला या आंवले के चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से अम्लपित्त रोग ठीक हो जाता है।
- ❑ हरड़ के चूर्ण में थोड़ा सा शहद मिलाकर चाटना चाहिए।
- ❑ अम्लपित्त रोग होने पर रोगी के शरीर में कई तरह के विकार पैदा हो जाया करते हैं। इन विकारों से छुटकारा पाने के लिए काली मिर्च सौंठ और नीम की छाल को मिलाकर बारीक पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को सुबह शाम एक चम्मच की मात्रा में ताजे पानी से लेने से फायदा होता है।
- ❑ पीपल, सूखा आंवला, छोटी हरड़, धनिया, कुटकी को समभाग मात्रा में लेकर पीस लें। इसमें इनके बराबर की मात्रा में मुनक्का दाख भी मिला लें रात्रि के समय लगभग 15 ग्राम की मात्रा में इस मिश्रण को लेकर एक मिट्टी के सकोरे में पानी में भरकर उसमें मिला दें। सुबह इस मसलन को छानकर पी लें। दो-तीन महीने तक लगातार यह क्रिया करते रहने से अम्लपित्त रोग दूर हो जाता है।
- ❑ अगर इस रोग की वजह से पेट में दर्द की अनुभूति होती हो तो पीपल के वृक्ष की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से पेट दर्द में आराम मिलता है। काढ़े में गुड़ और सेंधा नमक डालना ना भूलें।
- ❑ ताजा आंवले के गुदे में बारीक पिसी हुई मिश्री मिलाकर रखनी चाहिए।
- ❑ मुनक्का 10 ग्राम और सौंफ आदि मात्रा में लेकर दोनों को 100 मिली. पानी में भिगो दें। सुबह मसलकर-छानकर पीने से अम्लापित्त में लाभ होता है।
- ❑ दाख, हरड़, बराबर-बराबर लें। इसमें दोनों में बराबर शक्कर मिला लें। सबको पीसकर 1-1 ग्राम की गोली बना लेने से अम्लपित्त, हृदय कंठ की प्यास, मंदाग्नि का शमन होता है।
- ❑ पकी निबौली के तीन चार दाने खाने से मंदाग्नि में फायदा होता है।
- ❑ धनिया, सौठ, शक्कर और नीम की सींक 6-6 ग्राम की मात्रा में ले। इसकर क्वाथ बनाकर सुबह शाम पीने से पित्त की जलन, खट्टी डकारें, अपचन, ज्यादा प्यास मिटती है। पित्त स्वर में भी इसका सेवन लाभ पहुँचाता है।
- ❑ त्रिफला चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में दिन में दो तीन बार पानी के साथ फांकने से एसिडिटी में लाभ होता है।

घरेलू उपचार

- ❑ ककड़ी या खीरे को बिना नमक के साथ खाने से अम्लपित्त रोगी ठीक होता है। ककड़ी या खीरा खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए।
- ❑ अगर वायु विकार की समस्या हो और व खट्टी डकारें आ रही हों, तो दो आलू में भून लें। इसमें जीरा काली मिर्च थोड़ा सा सेंधा नमक मिला लें। अब इसमें थोड़ा सा नीबू का रस मिलाकर इसका सेवन करें।
- ❑ गाय के दूध में गुड़ मिलाकर पीने से खूब खुलकर पेशाब आयेगा, जिससे अम्लता मिटने के साथ-साथ गर्मी व जलन भी मिट जायेगी।
- ❑ आधा चम्मच नीबू के रस की 3-4 बूंदे मिला लें। इसे दिन में 3-4 बार चाटने से अम्लपित्त में फायदा होता है।
- ❑ गुड़ के साथ जीरे का चूर्ण लेना चाहिए।
- ❑ धनिया और अदरक को बराबर की मात्रा में लेकर पानी के साथ सेवन करने से रोग में फायदा होता है।
- ❑ एसिडिटी की समस्या हो तो नारियल का पानी पीना चाहिए।
- ❑ काली मिर्च की चटनी के साथ काले चनों को खाना चाहिए।
- ❑ प्याज के रस में नीबू का रस मिला लें। इसके सेवन से पेशाब की जलन मिटती है।

- योग सन्देश से साभार

माह-फरवरी 2019 के आर्थिक सहयोगी

1.	ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15, फरीदाबाद	1000/-मासिक
2.	आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-	1000/-मासिक
3.	आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	800/- मासिक
4.	श्री चतर सिंह नागर जी, महामन्त्री, भा. हिन्दू सभा द्वारा	1000/-
5.	आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर-कर्नाटक	750/- मासिक
6.	श्री विनोद शर्माजी, मुंडका विलेज, नई दिल्ली	500/- आजीवन
7.	श्री चतर सिंह नागर जी, महामन्त्री, भा.हि.शुद्धि सभा	500/- मासिक
8.	श्री शिव कुमार मदान जी,ट्रस्टी,जनकपुरी, नई दिल्ली	250/-मासिक
9.	श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	100/- मासिक
10.	श्री देवेन्द्र कुमार नहार जी, ग्राम-विनोली क्वारेला, जि.अल्मोड़ा	100/-

श्रीमती संतोष वधवा जी द्वारा एकत्रित दानः

1.	श्रीमती स्नेहलता गोयल जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/- आजीवन
2.	श्रीमती नन्द दुलारी जी, बी-ब्लॉक, नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/- आजीवन
3.	श्रीमती कान्ता मल्होत्रा जी नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/- आजीवन
4.	श्रीमती सक्सेना जी, ई-ब्लॉक, नारायण विहार, नई दिल्ली	500/-आजीवन
5.	श्रीमती स्वराज थापर जीनारायणा विहार, नई दिल्ली	100/-आजीवन

श्रीमती सावित्री शर्मा जी द्वारा एकत्रित दानः
त्रैमासिक (गत तीन माह के लिए)

1.	श्री भीष्म लाल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-2	1000/-
2.	सुश्री वेद मदान जी, डबल स्टोरी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	800/-
3.	श्रीमती उमा बजाज जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-2	1000/-
4.	श्रीमती सरोज सहगल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	800/-
5.	श्रीमती प्रमिला घई जी, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	600/-
6.	श्रीमती बीना बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
7.	श्रीमती रेखा अरोड़ा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
8.	सुश्री विमला कुमारी जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
9.	श्रीमती विमला चौपड़ा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	300/-

शुद्धि समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन का स्थान	:	दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	रामनाथ सहगल
4. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
5. मुद्रक का पता	:	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली-110007
6. प्रकाशक का नाम	:	रामनाथ सहगल
7. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
8. प्रकाशक का पता	:	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली-110007
9. सम्पादक का नाम	:	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060

उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एकप्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।

मैं रामनाथ सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

रामनाथ सगहल
दिनांक 01.03.2019
प्रकाशक

67वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के **67वां वार्षिकोत्सव** के उपलक्ष्य में **नौ दिवसीय विशेष कार्यक्रम** का आयोजन **दिनांक 30 मार्च शनिवार से 7 अप्रैल रविवार 2019** तक मनाया जायेगा। महिला सम्मेलन, बाल सम्मेलन एवं सामवेदीय यज्ञ एवं वेद कथा, संगीत का आयोजन किया जा रहा है। **यज्ञ के ब्रह्मा** आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, **वेद प्रवचन** डॉ. कल्पना आर्या जी एवं आचार्य राजू वैज्ञानिक **भजन** अंकित शास्त्री जी के होगें। आप सादर आमन्त्रित हैं।

नरेन्द्र मोहन वलेचा, मन्त्री
आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

(पृष्ठ 5 का शेष)

सदुपयोग करने का ज्ञान उन्हें नहीं है, तो भी उनकी ये आवश्यकतायें पूरी नहीं हो सकतीं। और यदि इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक सामग्री तो राष्ट्र में पर्याप्त उत्पन्न होती है, परन्तु कुछ अन्यायी और अत्याचारी लोग इस सामग्री को जनता तक पहुँचने नहीं देते अथवा उसे लोगों से छीन लेते हैं तो भी जनता की ये आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती। अभाव, अज्ञान और अन्याय इन तीनों को राष्ट्र से दूर करने के उपाय भी वैदिक धर्म बताता है। वेद के पुरुष सूक्तों (ऋ. 10.90 यजु. 31 अथर्व 19-6) और अन्य विभिन्न स्थलों पर वेद में वर्णाश्रम व्यवस्था का उपदेश किया गया है। समाज के व्यक्तियों को उनके गुण कर्मो के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णो में विभक्त किया जाए और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास, इन चार आश्रमों में विभक्त किया जाये। वर्णाश्रम व्यवस्था गुण-कर्म पर आधारित है, जन्म पर नहीं। ब्राह्मण वे लोग होंगे जो विभिन्न प्रकर के ज्ञान-विज्ञानों का आविष्कार और प्रचार करेंगे। जो सत्य की खोज और प्रचार में ही अपना जीवन समर्पित कर देंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से भांति-भाँति के अज्ञानों को दूर करने का व्रत ले लेंगे। क्षत्रिय वे लोग होंगे जो राज्य प्रबन्धका काम सम्भाल कर जनता में किसी को किसी पर अन्याय नहीं करने देंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से अन्याय को मिटाने का व्रत ले लेंगे। वैश्य वे लोग होंगे जो पशु-पालन खेती और भांति-भांति के उद्योग धन्धों के द्वारा भांति-भांति की उपभोग सामग्री को उत्पन्न करेंगे और व्यापार द्वारा उसे सर्व-साधारण जनता तक पहुचाने का काम करेंगे और इस प्रकार राष्ट्र में से उपभोग सामग्री के अभाव को दूर करने का व्रत ले लेंगे। शूद्र वे लोग होंगे जो पढ़ाने लिखाने का पूरा अवसर देने पर भी कोई भी बुद्धि से करने का काम नहीं सीख सकेंगे। ये लोग टोकरी ढोने आदि शारीरिक श्रम के काम ही कर सकेंगे। ये लोग शेष तीन वर्णो की सेवा करके उन्हें अपना काम करने का अधिक अवसर देकर उनकी सेवा द्वारा राष्ट्र की सेवा करेगें और इस सेवा को ही अपना व्रत बना लेंगे।

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 04-03-2019

Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार
मार्च-2019

सरदार भगत सिंह का नाम अमर शहीदों में सबसे प्रमुख

सरदार भगतसिंह का नाम अमर शहीदों में सबसे प्रमुख रूप से लिया जाता है। भगतसिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर में बंगा गांव (जो अभी पाकिस्तान में है) के एक देशभक्त सिख परिवार में हुआ था,जिसका अनुकूल प्रभाव उन पर पड़ा था। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था।

यह एक सिख परिवार था जिसने आर्य समाज के विचार को अपना लिया था। उनके परिवार पर आर्य समाज व महर्षि दयानन्द की विचारधारा का गहरा प्रभाव था। भगत सिंह के जन्म के समय उनके पिता 'सरदार किशन सिंह' एवं उनके दो चाचा 'अजीतसिंह' तथा 'स्वर्णसिंह'अंग्रेजों के खिलाफ होने के कारण जेल में बंद थे। जिस दिन भगतसिंह पैदा हुए उनके पिता एवं चाचा को जेल से रिहा किया गया। इस शुभ घड़ी के अवसर पर भगतसिंह के घर में खुशी और भी बढ़ गई थी।

भगतसिंह के जन्म के बाद उनकी दादी ने उनका नाम 'भागो वाला'रखा था। जिसका मतलब होता है 'अच्छे भाग्य वाला'। बाद में उन्हें 'भगतसिंह' कहा जाने लगा। वह 14 वर्ष की आयु से ही पंजाब की क्रांतिकारी संस्थाओं में कार्य करने लगे थे। डी.ए.वी. स्कूल से उन्होंने नौवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। झ 1923 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद उन्हें विवाह बंधन में बांधने की तैयारियां होने लगी तो वह लाहौर से भागकर कानपुर आ गए। फिर देश की आजादी के संघर्ष में ऐसे रमें कि पूरा जीवन ही देश को समर्पित कर दिया। भगतसिंह ने देश की आजादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया,वह युवकों के लिए हमेशा ही एक बहुत बड़ा आदर्श बना रहेगा। भगतसिंह को हिन्दी,उर्दू,पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भी आती थी जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। जेल के दिनों में उनके लिखे खतों व लेखों से उनके विचारों का अंदाजा लगता है। उन्होंने भारतीय समाज में भाषा,जाति और धर्म के कारण आई दूरियों पर दुख व्यक्त किया था।

उन्होंने समाज के कमजोर वर्ग पर किसी भारतीय के प्रहार को भी उसी सख्ती से सोचा जितना कि किसी अंग्रेज के द्वारा किए गए अत्याचार को। उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उग्र हो जाएगी,लेकिन जबतक वह जिंदा रहेंगे ऐसा नहीं हो पाएगा। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद भी माफीनामा लिखने से साफ मना कर दिया था।

अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की सोच पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की। काकोरी कांड में रामप्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रांतिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजा से भगत सिंह इतने ज्यादा बेचैन हुए कि चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन'। इस संगठन का उद्देश्य सेवा,त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था। इसके बाद भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसंबर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जेपी सांडर्स को मारा। इस कार्रवाई में क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने भी उनकी पूरी सहायता की। इसके बाद भगत सिंह ने अपने क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर अलीपुर रोड़ दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेंट्रल असेम्बली के सभागार में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके। बम फेंकने के बाद वहीं पर उन दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी। इसके बाद'लाहौर षडयंत्र' के इस मुकदमें में भगतसिंह को और उनके दो अन्य साथियों,राजगुरु तथा सुखदेव को 23 मार्च,1931 को एक साथ फांसी पर लटका दिया गया। यह माना जाता है कि मृत्युदंड के लिए 24 मार्च की सुबह ही तय थी,लेकिन लोगों के

भय से डरी सरकार ने 23–24 मार्च की मध्यरात्रि ही इन वीरों की जीवनलीला समाप्त कर दी और रात के अंधेरे में ही सतलज के किनारे उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया। यह एक संयोग ही था कि जब उन्हें फांसी दी गई और उन्होंने संसार से विदा ली,उस वक्त उनकी उम्र 23 वर्ष 5 माह और 23 दिन थी और दिन भी था 23 मार्च। अपने फांसी से पहले भगत सिंह ने अंग्रेज सरकार को एक पत्र भी लिखा था,जिसमें कहा था कि उन्हें अंग्रेजी सरकार के खिलाफ भारतीयों के युद्ध का प्रतीक एक युद्धबंदी समझा जाए तथा फांसी देने के बजाए गोली से उड़ा दिया जाए,लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

भगतसिंह की शहादत से न केवल अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष को गति मिली बल्कि नवयुवकों के लिए भी वह प्रेरणा स्रोत बन गए। वह देश के समस्त शहीदों के सिरमौर बन गए। उनके जीवन पर आधारित कई हिन्दी फिल्में भी बनी हैं जिनमें– द लीजेंड ऑफ भगत सिंह,शहीद,शहीद भगत सिंह आदि। आज भी सारा देश उनके बलिदान को बड़ी गंभीरता व सम्मान से याद करता है। भारत और पाकिस्तान की जनता उन्हें आजादी के दीवाने के रूप में देखती है जिसने अपनी जवानी सहित सारी जिंदगी देश के लिए समर्पित कर दी।

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिन्टर्स-2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005, से मुद्रित एवं
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7, दूरभाष: 9711258445, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादक: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह-सम्पादक: डॉ. देवेश प्रकाश आर्य